इसलिए कहते हैं कि अंबिया और सहाबा के गैबी मदद के वाक़िआत ख़ूब बोला करो, कि अल्लाह ने इनके साथ जो भी किया है, वह अपने ज़ाब्ते (क़ानून) बताने के लिए और इनके दिलों में जमाने के लिए किया है। यह तीसरा सबब है ईमान की तक्वीयत का, कि सहाबा रज़ि० के साथ अल्लाह की गैब ताइद के वाक़िआत को ख़ूब बोला करो। इसलिए हज़रत युसूफ़ साहब रह० सारी "हयातुस्सहाबा" तर्तीब देकर आख़िर में गैबी ताईद के वाक़िआत को जमा किया है। कि अल्लाह ने सहाबा की ताईद किस तरह की और किन आमाल पर की है। तो मैं बता रहा था कि अस्बाब की हैसियत यह है, अब चाहे वह अस्बाब चाहे नबी के पास हों, चाहे वह अस्बाब वली के पास हों और चाहे वह अस्बाब उम्मती के पास हों, अस्बाब की हैसियत यह है। अल्लाह का अस्बाब पर कोई वायदा नहीं है, यह पक्की बात है।

अल्लाह की कुदरत वायदों के साथ है। और
अल्लाह के वायदे हुक्मों के साथ हैं।

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾

यह सीधा और सही रास्ता है। अस्बाब के साथ वायदा भी नहीं और कुदरत भी नहीं, लोगों पर ताज्जुब है कि वह अल्लाह के सामने अपने अस्बाब रखकर दुआएं मांगते हैं। मेरे दोस्तो! अल्लाह के सामने आमाल रखकर दुआएं मांगो, कि—

ऐ अल्लाह! यह सदक़ा मैंने दिया है, इस पर तेरा वायदा है।
ऐ अल्लाह! मैंने नमाज़ पढ़ी है, इस पर तेरा वायदा है।
ऐ अल्लाह! मैंने सच बोला है इस पर तेरा वायदा है।

मशहूर वाक़िआ है कि तीन आदमियों का जो ग़ार में फंसे थे और चट्टान ने रास्ता बंद कर दिया था। यहां उनके लिए सिवाए मौत के और कोई रास्ता नहीं था, तो यहां हर एक ने अल्लाह के सामने अपना—अपना अमल पेश किया। हां, सबब नहीं बल्कि अमल पेश किया।

एक ने मुआशरे का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने मामलात का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने अख़्लाक़ का अमल पेश किया एहसान का।

किसी ने बैठकर यह दुआ नहीं मांगी कि ऐ अल्लाह! कोई ऐसी किरेन भेज

दीजिए जो इस चट्टान को हटा दे, या कोई ऐसा सेलाब हो जो चट्टान को बहा दे, या कोई ज़लज़ले का ऐसा झटका हो कि चट्टान को यहां से सरका दे। जी हां, यहां पर उन तीनों ने अल्लाह के सामने अपना-अपना अमल पेश किया।

एक ने अपना अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह! मैं अपने वालिदैन से पहले अपने बच्चों को ख़ुराक नहीं देता था कभी दूध नहीं पिलाया था। जब भी मैं जंगल से आता तो सबसे पहले बकरी से दूध निकालकर अपने मां-बाप को पिलाता था। एक दिन मुझे वापसी में देर हो गई जिसकी वजह से मेरे वालदैन सो चुके थे, तो मैं सारी रात दूध का प्याला लेकर मां-बाप के पास खड़ा रहा। इधर मेरे बच्चे दूध की वजह से रोते-बिलकते रहे, पर मैंने उनको दूध नहीं दिया। बल्कि दूध का प्याला लिए हुए मैं अपने वालदैन के पास खड़ा रहा। कि उनको नींद से उठाना मैंने सही नहीं समझा और बच्चों को उनसे पहले दूध पिलाना ठीक नहीं समझा।

मां-बाप के साथ औलाद का मामला, जानवरों जैसा

अब तो अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि अब तो मुसलमान का मामला अपने मां-बाप के साथ ऐसा है कि, जिस तरह जानवरों के बच्चों का मामला होता है। कि किसी जानवर का बच्चा बड़ा होकर अपने मां-बाप को नहीं पहचानता, हालांकि इंसान को इसकी वासियत की गई है कि तेरी पैदाइश के वक़्त तुझे पेट में रखने की उन्होंने तक्लीफ़ उठाई, तूझे दूध पिलाने की उन्होंने तक्लीफ़ उठाई, पर अब मां-बाप बोझ हो गए। मां-बाप की ख़िदमत न करना, आज मुसलमानों में सबसे बड़ी बे-बरकती की वजह है। लोग बरकतों की तावीज़ लेते हैं, हालांकि की मां-बाप की ख़िदमत से बढ़कर कोई चीज़ बरकत का सबब नहीं है, सारे आमाल एक तरफ़। इसलिए कि औलाद मां-बाप की कर्ज़दार है, कि उस पर हमल (मां का बच्चे को पेट में 9 महीने रखना) का क़र्ज़, उस पर दूध पिलाने का क़र्ज़ और उसको जनने का क़र्ज़, ये सारे क़र्ज़ है औलाद पर अपने मां-बाप के और अब अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि आज औलाद से अपने मां-बाप का मामला जानवरों के जैसा है। कि बड़े हुए और मां-बाप को अकेले छोड़ा।

तो वहां ग़ार में उन्होंने अमल पेश किया तो चट्टान थोड़ी सी हट गई अपनी जगह से लेकिन किसी के निकलने का रास्ता न बना, ऐसा नहीं है कि तुम अमल

करो तो तुम्हारी निजात, और वे अमल करें तो उनकी निजात कि उम्मत का मामला इज्तिमाई है और दीन भी इज्तिमाई है। ऐसा नहीं है कि जो अमल कर ले उसकी निजात हो जाए बल्कि दीन मुज्तमा और उम्मत मज्मूआ है।

मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं

तो दूसरे ने अमल पेश किया मामलात में एहसान का, कि मैंने एक मज़दूर से काम लिया पर वह अपनी मज़दूरी छोड़कर चला गया और मैंने उसकी मज़दूरी से बहुत से माल तैयार किया। और फिर काफ़ी वक़्त के बाद वह मेरे पास अपनी मज़दूरी लेने के लिए आया तो उस वक़्त सारी वादी जानवरों से भरी हुई थी। तो मैंने उससे कहा कि यह सब तेरी मज़दूरी है, तो इन्हें ले जा। क्योंकि इसने उसकी मज़दूरी ही से सारा माल बनाया था। और जितना माल इसकी मज़दूरी से बना, उसने उसको बचाकर रखा। और फिर उसके आने पर मैंने इसको सारा सामान ले जाने के लिए पेश किया, तो उस मज़दूर ने कहा कि ऐ अल्लाह के बंदे! मुझसे मज़ाक न कर बल्कि मेरी मज़दूरी दे दे। उसने कहा कि मैं तुझसे मज़ाक नहीं कर रहा हूं, ये सारे का सारा तेरा ही है, तू इसे ले जा। मामले में एहसान का अमल। जी हैं, अमल पेश करके कहा कि ऐ अल्लाह! अगर ये मैंने तेरे लिए किया है तो यहां से हमें निकाल दे। चट्टान फिर सरकी, लेकिन एक का भी निकलने का रास्ता नहीं हुआ कि दीन मज्मूआ है और उम्मत मज्मूआ है।

मामलात की वजह से आने वाले हालात, इबादत से ठीक नहीं होंगे

अब मैं कैसे समझाऊं दोस्तो! लोग लम्बी-लम्बी नमाज़ें, बड़ी-बड़ी इबादतें, हज पर हज करते हैं, ज़िक्र बहुत लम्बा-लम्बा, लेकिन मामलात, मुआशरत और अख़्लाक़ इन तीनों लाइनों में यह फ़ेल (नाकाम) है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जो हालात मामलात की वजह से आएंगे, वह इबादत से ठीक नहीं होंगे, अगर यह चाहे की हमारी इबादतों से तंगी (परेशानी) दूर हो जाए, तो यह तंगियों से नहीं निकल पाएंगे। मेरे दोस्तो! मामलात बहुत अहम चीज़ है, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए कि हमारे माहौल में इस का एहतिमाम नहीं है। क्योंकि जिनकी नज़र अपनी इबादत पर होती है, उनके अंदर इतना फ़ख़ पैदा हो जाता है कि वे मामलात की परवाह

नहीं करते। हालांकि ख़ुदा की क़सम! मामलात को बिगाड़कर दुनिया में इबादतें करने वाले, अपनी सारी इबादतें सिर्फ़ दूसरों के लिए कर रहे हैं। ये अपनी इबादत से क़ियामत में ऐसे ख़ाली हो जाएंगे कि शायद उन्होंने दुनिया में कोई अमल किया ही नहीं है। कि क़ियामत में हक़ वालों (यानी जिनका दुनिया में हक़ मारा होगा) को उनकी इबादतें दी जाएंगी और जब इबादतों से वे ख़ाली हो जाएंगे, तो उन इबादत करने वालों पर हक़ वालों के गुनाह डाले जाएंगे, फिर उन इबादत करने वालों को जहन्नम में डाल दिया जाएगा। फिर यह कि वह इबादत करने वाला जिसने मामलात की परवाह न करके इबादतें की हैं मामलात के हुक्म तोड़कर।

यह बड़ी फ़िक्र की बात है कि कहीं हमारे मामलात की वजह से, हमारी इबादतों पर दूसरों का क़ब्ज़ा न हो जाए, कि हमारे मामलात पर इबादत का पर्दा न पढ़ जाए, कि क़ियामत में अल्लाह इस पर्दे को उठाएंगे और मुतालबे करने वालों के मुतालबे को, इसकी इबादत से पूरा करेंगे। क्योंकि आख़िरत की करंसी (नोट) आमाल हैं। यह वहां की ज़रूरत है इसलिए अपनी इबादतों को महफ़ूज़ करो। वरना हक़ वाले सारे इबादतें ऐसे ले उड़ेंगे कि गोया उन इबादतों में आपका कोई हिस्सा नहीं।

मक़्बूल नमाज़ें (क़बूल हुई नमाज़ें),
मक़्बूल हज (क़बूल हुई हज),
मक़्बूल ज़िक्र—अज़्कार (क़बूल हुई ज़िक्र—अज़्कार),
मक़्बूल रोज़े (क़बूल हुई रोज़े),
सब नेकियां दूसरे ले उड़ेंगे।

फ़ाक़ा (भूख और प्यास) तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है

मैं बता रहा था कि फिर तीसरे ने अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह मेरे चचा की लड़की जो मुझे महबूब थी मैं उसके साथ ख़िलवत (तंहाई) चाहता था दुनिया में अगर मुझे किसी औरत से मुहब्बत थी तो मुझे उसी से थी, मैं उसके साथ ख़िलवत (तंहाई) चाहता था, मगर वह ख़िलवत (तंहाई) का मौक़ा नहीं देती थी फिर कहत साली (सूखा) की वजह से उस पर तंगी आई, तो वह मुहताज होकर

मेरे पास आई। मैंने कहा कि मैं तुझे 120 दीनार दूंगा, मगर यह कि तू मेरे साथ खिलवत (तंहाई) इख़्तियार कर ले। वह इस बात पर राज़ी हो गई क्योंकि फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है, तो उसके फ़ाक़े ने बदकारी के लिए तैयार कर दिया। तो फिर ऐ अल्लाह! जब बदकारी के इरादे से उसकी टांगों के दर्मियान बैठ गया, तो वह मुझसे बोली कि अल्लाह से डर। ऐ अल्लाह! मैंने तुझसे डरकर यह काम नहीं किया। कि ऐ अल्लाह! मैंने तेरे डर से उससे ज़ीना नहीं किया व 120 दीनार भी उसको दे दिए। ऐ अल्लाह! तू मेरे निकलने का यहां से इंतिज़ाम कर दे।

मदद के ज़ाब्ते

देखो भाई मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गों! ये वाक़िआत मदद के ज़ाब्ते बताने के लिए हैं कि लोग ऐसे वाक़िआत सुनकर कहते हैं कि "सुब्हानअल्लाह" पर ज़िंदगी वहीं की वहीं। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जितने पिछलों के वाक़िआत हैं उनसे पिछलों को नहीं बतलाना है बल्कि वाक़िआत के क़ियामत तक अल्लाह की मदद के ज़ाब्ते बतलाना है कि ये मदद के ज़ाब्ते हैं। वे ऐसे थे, वे ऐसे थे बल्कि तो यह बताने के लिए थे अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा। बल्कि जितना उनके साथ हुआ है, उससे 10 गुना ज़्यादा एक मोमिन के साथ होगा। हदीस में आता है, कि एक मोमिन की मदद 10 सहाबा की ब–क़द्र होगी और एक मोमिन को अमल पर अज्र 50 सहाबा के बराबर मिलेगा। देखो यह बहुत बड़ी बात है, सही रिवायत में है। "मुंतख़ब अहादीस" में हज़रत ने यह बात नक़ल की है। कि ऐसी हदीस हज़रत ने मुंतख़ब अहादीस में चुन–चुनकर जमा की हैं। ग़ौर किया करो उन हदीसों पर। तो ईमान के सीखने का यह तीसरा सबब है फिर सहाबा रज़ि० के साथ जो ग़ैबी मदद हुई हैं, उन्हें ख़ूब बोला करो।

और चौथा ईमान की तक्वीयत (मज़बूती) का सबब यह है कि ईमान की अलामतों को ख़ूब बोला करो ताकि ईमान की कमज़ोरी का हमारे अंदर एहसास हो जाए कि कितनी बे–परवाही है ईमान से। कि जब तुम्हें नेकी ख़ुश करे और गुनाह ग़मगीन करे तो जान ले कि तू मोमिन है कि ईमान तो अपनी अलामतों के साथ है। नेकियों से ख़ुश होना यह अल्लाह का हुक्म पूरे करके ख़ुश हो रहे हो और गुनाह से ग़मगीन होना एक अदना (छोटी–सी) सुन्नत के छूटने पर हमें ग़म

हो रहा है, उसी को तौबा कहते हैं। जो गुनाह करके ग़मगीन नहीं होगा वे तौबा नहीं करेगा, यह ईमान की तक्वीयत (मज़बूती) के अस्बाब।

ईमान की सबसे अहम अलामत (निशानी) "तक़्वा"

कि ईमान की सबसे अहम अलामत तक़्वा है, कि कुरआन में कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' को तक़्वे का कलिमा फ़रमाया है। और मोमिन को इसका हक़दार बतलाया।

﴿إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا﴾(الفتح:٢٦)

"जबकि इन काफ़िरों ने अपने दिलों में आर (इस आर से वह ज़िद मुराद है जो बिस्मिल्लाह और लफ़्ज़ रसूलुल्लाह लिखने में इन्होंने मुसलमानों से की थी) को जगह दी। और आर भी जाहिलियत की तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मोमिनीन को अपनी तरफ़ से तहम्मुल अता किया और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वे की बात पर जमाए रखा और वे इसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं और वे इसके अहल हैं और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है।"

कि अल्लाह ने जमाया ईमान वालों को, तक़्वे के कलिमे पर क्योंकि ईमान की पहचान तक़्वा है इसलिए मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें अपनी ज़िंदगी में तक़्वा लाना होगा। तक़्वा कहते हैं हराम से बचने को यह तक़्वा सबसे पहले मामलात में चाहिए, मामलात में सबसे पहले तक़्वा लाना सबसे ज़रूरी है कि जिस तरह बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती उसी तरह बग़ैर मामलात के इबादत नहीं होगी पहले तहारत (पाकी) फिर इबादत, पहले वुज़ू फिर नमाज़, बिल्कुल उसी तरह ख़ुदा की क़सम पहले मामलात, फिर इबादात, उस पर बहुत ग़ौर करना होगा, जिस्म में दौड़ने वाला ख़ून अगर,

सूद से,
ग़बन (घोटाला) से,
झूठ से,

खियानत से,

रिश्वत से,

पाक नहीं है तो उसने अपने जिस्म को इबादत के लिए बनाया ही नहीं है, कि जिस्म में ख़ून दौड़ रहा है हराम और यह कर रहा है इबादत।

मामलात के गुनाह, इबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे

लोग बिचारे यह समझते हैं कि मामलात के गुनाह इबादत से पाक हो जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं होगा मामलात के गुनाह इबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे। कि उसने इबादत की जो पहली शर्त तहारत (पाकी) है उसी को पूरा नहीं किया, कि तहारत के बग़ैर तो इबादत ही नहीं है उलमा ने लिखा है जिस तरह मुसल्ले और कपड़े और बदन का ज़ाहिर (जो दिख रहा है) पाक है उसी तरह बदन का बातिन (यानी अंदर से) भी पाक हो, यह भी ज़ाहिरी तक़्वा है कि अपने ख़ून को पाक रखो। किस चीज़ के लिए? इबादत के लिए, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए कि ग़ैर तो ख़ूब जानते हैं इस बात को कि इनको सूद खिलाओ फिर उनकी बद–दुआओं से बचने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उनकी दुआओं से खुद उनको कुछ मिलने वाला नहीं। क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से हराम खाने वाले के लिए दुआ के जवाब में यही जुमला है। "أنى لك الإجابة؟"

मैं तेरी दुआ क्यों क़बूल करूं?

खाना हराम का,

पीना हराम का,

पहनना हराम,

और फिर यह बड़ी अजिज़ी के साथ अल्लाह को पुकारें कि ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! रो रोकर दुआएं मांगे। अपनी ज़रूरतों को अल्लाह के सामने रखे और अल्लाह कहे– "أنى لك الإجابة"

कि मैं तेरी दुआ क्यों क़बूल करूं?

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ों और बुज़ुर्गों! कि सबसे पहले मामलात में दीन

लाना होगा, यह ऐसा है कि जैसे नमाज़ के लिए तहारत की पहले तक़्वा मामलात में लाओ इसलिए कि सारी नेकियों का मिदार तक़्वे पर है, और अल्लाह का तक़्वे पर वादा है कि जो हराम से बचना चाहेगा हम उसे बचाकर निकालेंगे।

हम तो मुत्तक़ी (दीनदार) के लिए रास्ता ज़रूर निकालेंगे

कि हज़रत युसूफ़ अलै० निकलते चले गए और उनके लिए दरवाज़े खुलते चले गए, एक आदमी अगर हराम से बचना और अल्लाह उसके लिए रास्ते न बनाए ऐसा कैसे हो सकता है, कि हज़रत युसूफ़ अलै० निकलते चले गए और दरवाज़े खुलते चले गए, हां, देखो एक बात याद रखो कि जो आदमी तक़्वे की लाईन इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआला उसके तक़्वे का इम्तिहान ज़रूर लेंगे, कि यह अपने तक़्वे में मुख़लिस (पक्का) है या नहीं। तो हज़रत युसूफ़ अलै० बचकर निकले तक़्वे की वजह से लेकिन उन्हें जैल हो गई, लेकिन इसकी वजह यह है कि जब आदमी गुनाहों से बचता है कि अल्लाह यह देखना चाहता है कि कहीं यह गुनाह की तरफ़ वापस तो नहीं जा रहा है, क्योंकि आपने देखा होगा कि बहुत से लोग आपको ऐसे मिलेंगे कि जिन्होंने तक़्वे को इख़्तियार किया हराम कारोबार छोड़ दिया, फिर अल्लाह ने उन पर हालात डाले कि कर्ज़ा आया और तंगी आई तो अल्लाह हमें माफ़ फ़रमाए और हिफ़ाज़त फ़रमाए कि बाज़ लोग उन हालात से तंग आकर हाराम की तरफ़ फिर वापस चले जाते हैं कि जबकि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाते हैं कि हम हल्का सा तुम्हें आज़माएंगे कि–

﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ﴾ [البقرة ١٥٥–پ:٢]

"और (देखो) हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे, किस क़द्र ख़ौफ़ से और फ़ाक़े से और माल और जान और फ़लों की कमी से और आप ऐसे साबिरीन को बशारत सुना दीजिए।"

थोड़ी–सी भूख,
थोड़ा–सा नुक़्सान,
थोड़ा–सा ख़ौफ़

अगर इस पर जमा रह गए, तो फिर इसके बाद रास्ते खोल देंगे, यह आज़माइश

के लिए होता है पर लोग इन हालात के आने पर हराम की तरफ़ फिर वापस हो जाते हैं। जी हां, कि अल्लाह सच बोलने वालों को अज़माएंगे और सच्चाई में कि हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह कि वह ग़ज़वा–ए–तबूक से पीछे रह गए थे तो सच बोल दें कि मेरे पास कोई उज़्र नहीं था क्योंकि मेरे पास माल भी था सवारी भी थी पर मैं अल्लाह के रास्ते में निकलने से पीछे रहा हूं। उज़्र कोई नहीं था मुझसे ग़लती हुई है साफ़–साफ़ बात। तो अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नाराज़ हो गए क्योंकि काब बिन मालिक रज़ि० सच बात कह दी थी। कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से बाहर निकले तो लोगों ने कहा कि ऐ काब! तुमने यह क्या किया? अगर तुम झूठा उज़्र कर देते तो जान भी बच जाती और अल्लाह के नबी तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार भी करते और फिर इस इस्तिग़फ़ार से तुम्हारे झूठ बोलने का गुनाह माफ़ हो जाता। उन लोगों ने उनको यह मश्विरा दिया, तो उनको यह ख़्याल आया कि मैं वापस जाऊं और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहूं कि मैंने जो कुछ आपको बताया है वह झूठ है और बात यह है। फिर मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऊपर अल्लाह मौजूद है और वह देख रहा है, अगर मैंने झूठ बोलकर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को राज़ी कर भी लिया तो अल्लाह अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुझसे नाराज़ कर देंगे। इसलिए अब सब्र करो।

दोस्तो! मुझे तो यह अर्ज़ करना था कि जब कोई आदमी हराम से हुक्म की तरफ़ आता है तो अल्लाह उसको आज़माते हैं कि तंगी में यह जमता है या नहीं जमता।

इसलिए मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! हज़रत यूसुफ़ अलै० तक़्वा इख़्तियार करके निकल कर भागे, लेकिन वहां से निकलने के बाद जैल हो गई। लेकिन जैल के अंदर भी दो काम करते रहे, कि जैल में आने वाले को दावत भी देते गए और इबादत भी करते रहे। यह नहीं कि अब हमारे हालात दावत देने के नहीं हैं।

हालात (परेशानी) में काम न करना, काम को छोड़कर इससे बड़े हालात को दावत देना है

कि ऐसे भी लोग हैं जो यह कहते मिल जाएंगे कि अभी हमारे हालात ज़रा ठीक नहीं हैं।

न साल का चिल्ला,
न महीने के तीन दिन,
न हफ़्ते के दो गश्त,

कि कुछ मुक़दमा वगैरह हो गया था, हम पर झूठा इल्ज़ाम लगा दिया गया था कि ज़रा उससे निपट जाएं, फिर इनशाअल्लाह काम करेंगे। हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० फ़रमाते थे "जो हालात में काम नहीं करेंगे, उन्होंने काम को छोड़कर, इससे बड़े हालात को दावत दे दी है"। अब आगे उन पर इससे बड़े हालात आएंगे, जिसे यह बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। क्योंकि जो अपने मौजूदा हाल में दावत नहीं देगा, वह उससे बड़े हालात में मुब्तला होगा। हज़रत यूसुफ़ अलै० जेल में दावत देते रहे और अल्लाह ने उसी दावत के ज़रिए से उन्हे जेल से निकाला।

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ों और बुजुर्गो! देखो याद रखो कि अल्लाह तआला तक़्वा इख़्तियार करने वालों को आज़माएंगे। अगर तक़्वे पर जमे रहे तो अल्लाह हमेशा के लिए बरकतों के दरवाज़े खोल देते हैं। लेकिन एक ज़रूरी बात जो मुझे अर्ज़ करनी हैं कि तक़्वा और सब्र हज़रत यूसुफ़ अलै० ने ये दोनों चीज़ें बराबर इस्तेमाल की हैं। हमारी मुश्किल यह है कि हम सब्र को तो इख़्तियार करते, पर तक़्वा इख़्तियार नहीं करते। कुरआन में जहां भी मिलेगा सब्र और तक़्वा साथ ही मिलेगा।

कहीं सब्र आगे, कहीं तक़्वा आगे, कि कुरआन में दोनों साथ–साथ मिलेंगे, पर मुसलमान की मुश्किल यह है कि इस ज़माने में सब्र कर रहा है तक़्वा के बगैर, आज जितनी उनकी पिटाई हो रही है, धमाके हो रहे हैं, क़त्ल हो रहे हैं। सारे मुसलमान इस इंतिज़ार पर बैठें हैं कि अब अल्लाह की मदद आने वाली हैं, कि अब अल्लाह की मदद आने वाली है।

मेरी बात ध्यान से सुनो, दोस्तो! सब यह कह रहे हैं कि सब्र करो, यह ख़ून बेकार नहीं जाएगा, अल्लाह की मदद ज़रूर आएगी। एक बात याद रखो कि जब मुसलमान अल्लाह के हुक्मों को तोड़कर सब्र करता है, तो फिर अल्लाह तआला बातिल को इन पर मुसल्लत करता है अगर मुसलमान तक़्वे के साथ सब्र करता

है तो अल्लाह उनको अहले बातिल पर ग़ालिब करते हैं। सहाबा और नबियों के वाक़िआें का यह खुलासा है। इसलिए कि जो परेशानियां गुनाहों की वजह से आती हैं वह सब्र कर लेने से ठीक नहीं होते, कि आज मुसलमान सब्र तो कर रहा है, पर तक़्वा नहीं है। यह सब्र करना अल्लाह ने कुरआन में फ़रमा दिया।

﴿اصْبِرُوْا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ﴾

"कि तुम सब्र करो या न करो हमारे लिए दोनों बराबर हैं, इसलिए कि तुम्हे सब्र से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

दोज़ख़ियों से कहा जाएगा–

﴿اصْبِرُوْا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ﴾

"कि तुम सब्र करो या न करो, कि तुम्हें यह जो अज़ाब दिया जा रहा है अहानत (ज़िल्लत) का, ये तुम्हारे गुनाहो का है।"

याद रखो यह जितने हालात दुनिया में मुसलमानों पर इस वक़्त हैं यह सिर्फ़ सब्र से ख़त्म नहीं होंगे। क्योंकि इन परेशानियों के आने के जो सबब है, वह मुसलमानों का ग़ैरों की तरीक़ों पर ज़िंदगी गुज़ारना है। तुम इन तरीक़ों से अलग हो जाओ, फिर तुम्हारे लिए दो चीज़ें होंगी।

पहली, अमन और

दूसरी, हिदायत

यह कुरआन की बात है। हिदायत का मतलब यह है कि जन्नत का रास्ता आख़िरत में और अमन का मतलब यह है कि सुकून की ज़िंदगी दुनिया में। यह वायदा उनसे है जो ग़ैरों के तरीक़ों से पूरी तरह अलग हो जाएं, यह जो मैं अर्ज़ कर रहा हूं कि कुरआन की आयत का मफ़हूम है

﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ [انعام ۸۲]

"कि रास्ता वे पाने वाले हैं और अमन भी उन्हें मिलेगा, जिनके ईमान में ग़ैरों के तरीक़े की आमज़ीश (मिलावट) न हो"।

इसलिए मेरे दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! मुसलमान तक़्वा के बग़ैर ग़ैरों से मुम्ताज़ नहीं हो सकता, कि मुसलमान की इम्तियाज़ी शान तक़्वे से है।

﴿إِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا﴾ [انفال ٢٩]

"तुम अल्लाह से डरते रहोगे वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फैसले की चीज़ देगा।"

"अगर तुममें तक़्वा होगा तो तुम ग़ैरों से छांटे जाओगे और अगर तक़्वा नहीं है तो तुम और ग़ैरों में कोई फ़र्क़ नहीं है।"

इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झंडे का नाम

इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झंडे का नाम नहीं है या इस्लाम इस्लामी हुकूमत का नाम नहीं है, बल्कि इस्लाम तो मुकम्मल तरीक़ा ज़िंदगी का नाम है। इस तरीक़े पर चलने वाला मुसलमान है, इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ें हैं। तो जब पांच चीज़ें इस्लाम की बुनियाद हैं फिर इस्लाम क्या है जिस तरह मकान की बुनियाद होती है या मस्जिद की बुनियाद, होटल की बुनियाद, कि ज़मीन के नीचे होती है, फिर उस बुनियाद पर मकान की तामीर की जाती है। तो जब इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ें हैं फिर इस्लाम क्या है? कि—

मामलात,
अख़्लाक़,
मुआशरत,

यह इस्लाम की इमारत है।

और सात चीज़ें ईमान की बुनियाद हैं।

अल्लाह पर ईमान रखना,
उसके फ़रिश्तों पर,
उसके किताबों पर,
उसके रसूलों पर,
मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर,
अच्छी, बुरी तक़्दीर पर,
आख़िरत के दिन पर,

ये ईमान की बुनियाद हैं यानी अक़ाइद है। कि अक़ाइद के बग़ैर इमारत न

क़ायम होगी और इमारत के बग़ैर बुनियाद काफ़ी न होगी. दोनों बातें बराबर हैं, कि कोई अक़ाइद के बग़ैर चाहे इमारत क़ायम हो जाए तो इमारत क़ायम न होगी।

इसी तरह पांच चीज़ें इस्लाम की बुनियाद हैं

कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का इक़रार,
नमाज़,
रोज़ा,
हज और
ज़कात

और मामलात, अख़्लाक़ और मुआशरत, यह इस्लाम की इमारत है। सिर्फ़ बुनियाद काफ़ी नहीं है ज़रूरत पूरी करने के लिए और इमारत बनाना काफ़ी नहीं है बुनियाद के बग़ैर। इसलिए वह इमारत क़ायम ही नहीं रहेगी, जिसके नीचे बुनियाद ही न हो, कि लोग कहें कि हां, मियां नमाज़, रोज़ा अपनी जगह मगर मामलात ठीक होना चाहिए, कि मामलात, अख़्लाक़ और मुआशरत की इमारत क़ायम ही नहीं होगी कि जब तक बुनियाद न हो और सिर्फ़ बुनियाद ही काफ़ी न होगी जब तक उस पर इमारत न हो।

सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत (वली बनना) और बुज़ुर्गी नहीं है

इसलिए मेरे अज़ीज़ों और दोस्तो! एक तो सुन्नतों का एहतिराम ज़्यादा किया करो, कि सुन्न्त के बग़ैर कोई विलायत और बुज़ुर्गी नहीं है। मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि "मेरे काम का मक़सद एहयाए सुन्नत (सुन्न्त को ज़िंदा करना) है" कि मुसलमानों के अंदर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अपनी ज़िंदगी की ज़रूरत को हासिल करने का रिवाज पड़ जाए। क्योंकि अल्लाह ने अपनी मदद और बरकतें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लाज़िम कर दी है। मुसलमानों की शान ही सुन्नतों के साथ है, वरना भाई साफ़–साफ़ बात यह है कि मुसलमान सुन्नतों को हल्का समझकर अगर छोड़ दे तो यह सबसे पहले मुआशरती इरतिदाद (फिर जाना) में पड़ेगा, कि सबसे पहले इसका मुआशरत मुर्तद होगा।

कि इसने सुन्नत को हल्का समझकर छोड़ दिया है। मुसलमान का अपना इम्तियाज़ सुन्नतों के एहतिराम में है। वरना आप ख़ुद देख लें कि कहीं ट्रेन टकरा जाए या कहीं ज़लज़ला आ जाए, तो लोगों में देखना पड़ता है कि इनमें मुसलमान कौन है?

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि वे सारी अलामतें आज मुसलमानों के अंदर से ख़त्म हो गईं, जिसकी वजह से मुसलमान को दूर से देखकर ही अल्लाह की याद आती थी। अब तो ख़त्ना देखकर मुसलमान की पहचान की जाती है। कहां मुसलमान सर से लेकर पांव तक इस्लाम की अलामतों से भरा हुआ था कि दूर से पता चल जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ऐसे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ।

मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज़ नहीं

जैसे काले रंग के बाल में चंद बाल सफ़ेद हों कि वह सफ़ेदी अलग ही नज़र आएगी। आज तो सलाम करने के लिए, पहले नाम पूछना पड़ता है, इसलिए चेहरा से लगता ही नहीं है कि कौन मुसलमान है, जिसको सलाम किया जाए.। क्योंकि मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज़ नहीं है। इसको कभी पता ही नहीं किया कि इस्लाम में दाढ़ी का क्या मक़ाम है? बस इतना जानते हैं दाढ़ी सुन्नत है, मुसलमान हल्का समझते हैं दाढ़ी को। अब हममें और सहाबा में यही फ़र्क़ है कि वह सुन्नत पर अमल करते थे, सुन्नत होने की वजह से। हम सुन्नत को छोड़ते हैं, सुन्नत होने की वजह से। हममें और सहाबा रज़ि० में यह फ़र्क़ है।

इसलिए मुहतरम दोस्तों अज़ीज़ों और बुज़ुर्गों! इस काम से हमें अपने अंदर यह तब्दीलियां लानी है, क्योंकि—

दावत तो हिदायत के लिए है
दावत तो तर्बीयत के लिए है
दावत तो अपने आपको बदलने के लिए है

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने इस मेहनत में माहौल और यक़ीन को बदलने की ख़ासियत रखी है।

एक कश्ती चलाने वाली की दावत पर हिदायत

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर फ़र्द को दावत वाला बनाया था कि अबू जहल के बेटे इक्रिमा को एक कश्ती चलाने वाले की दावत पर हिदायत हुई है। हज़रत इक्रिमा रज़ि० इस्लाम से भागे, यह यमन की तरफ़ जा रही कश्ती में यह सवार हुए तो तूफ़ान आया, कश्ती पलटने लगी।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कश्ती वाले से कहा कि क्या मेरे बचने का कोई सामान हो सकता है?

कश्ती वाले ने कहा कि हां, बचने का एक रास्ता है और वह यह कि तुम कलिमा इख़्लास कह लो।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने पूछा कि यह कलिमा इख़्लास क्या है?

कश्ती वाले ने कहा! कि कहो 'ला इलाह इल्लल्लाहु'

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहा! कि मैं इससे बचकर ही यमन भाग रहा हू, अगर यह कलिमा ही कहना होता तो यमन क्यों भागता? इधर कश्ती वाले ने दावत दी उधर किनारे से उनकी बीवी ने कपड़ा हिलाकर उ हें इशारा किया। फिर यह वापस आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए।

मुझे इसमें यह अर्ज़ करना था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर फ़र्द को दाई बनाया था, सौ फ़ीसद सहाबा रज़ि० दावत वाले, तो इस दावत की अमूमियत ने लोगों के इस्लाम में आने का रास्ता खोला हुआ था, इस्लाम से निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

इसलिए मेरे दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! यह इरादे करो कि नीयतों करो कि हमें इनशाअल्लाह तआला इस काम को मक़्सद बनाकर करना है और सारी उम्मत को इस पर जमा करना है। यह भी हमारी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि हर उम्मती सारी उम्मत का ज़िम्मेदार है। हां, इतना ज़रूर है कि अल्लाह तआला यह काम उन्हीं लोगों से लेंगें, जो दीन के नुक़्सान को बर्दाश्त न करें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीने को खाली कराना चाहते थे, कि दीन का नुक़्सान न हो, कि लोग ज़कात में रस्सी देने से इंकार करें और तुम मदीने में रहो। कि चाहे मदीने में अज़्वाजे मुताहारात (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीविया) की दफ़न करने वाला

न हो, पर तुम सब चले जाओ और मुझे यहां अकेले छोड़ दो, मुझे यहां चाहे ख़त्म किया जाए और कोई मुझे भी दफ़्न करने वाला न हो, तब भी मैं मदीने को दीन के तक़ाज़े पर ख़ाली करूंगा। यह जज़्बा था दीन के साथ सहाबा रज़ि० का, अब यह जज़्बा ख़त्म हो गया, कि अल्लाह के दीन का नुक़सान हो और हम घर बैठे। कि सारे मदीने को ख़ाली किया कि निकलो! याद रखो! जब तक उम्मत में नक़ल व हरकत रहेगी, दीन की हयात बाक़ी रहेगी।

उम्मत दावत के बग़ैर निजात नहीं पा सकती

मैंने इसलिए शुरू में ही अर्ज़ कर दिया था कि उम्मत दावत के बग़ैर निजात नहीं पा सकती, यह बिल्कुल पक्की बात है, इसमें कोई शक नहीं है। इसलिए अल्लाह तआला यह ख़ुद फ़रमा रहे हैं।

﴿وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

'क़सम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा और नुक़सान वाकेअ होता है) कि इंसान बड़े ख़सारे में है, मगर जो लोग ईमान लाए और इन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक दूसरे को एतिक़ादे हक़ (पर क़ायम रहने) की फ़हमाइश करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की फ़हमाइश करते रहे"

हर फ़र्द के ज़िम्मे यह काम है, चाहे वह अमल करता हो या अमल न करता हो। यह भी सुनो! कि अमल करना शर्त नहीं है दावत के लिए। हां यह बात सही है कि दावत देने वाले को अमल भी करना चाहिए, लेकिन यह बात सही नहीं है कि जो अमल न करे वह दावत न दे। अमल न करने वाला दावत ज़्यादा दे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे "कि मैं जिस चीज़ को अपने अंदर पैदा करना चाहता था, तो उसकी दावत दूसरों को देता था और जिस बुराई को अपने अंदर से निकलना चाहता था, उससे दूसरों को रोकता था" ये दोनों काम, ख़ुद अपनी ज़ात के लिए हैं, इसलिए अमल शर्त नहीं है दावत देने के लिए। हां, दावत देने वाले को चाहिए कि वह अमल भी करे कि कहीं इसकी दावत अमल से ख़ाली न हो जाए।

इसलिए यह याद रखो! कि दावत देना तो हर एक के ज़िम्मे है, वह अमल

करता हो या अमल न करता हो, जब तक दावत की निस्बत पर नक़ल व हरकत बाक़ी रहेगी, उस वक़्त तक दीन ज़िंदा रहेगा और उम्मत पाक होती रहेगी कि यह रास्ता पाक होने का है। इसलिए कि हिजरत पिछले सारे गुनाहों से पाक करा देता है।

सौ क़त्ल करने वाले क़ातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम का बदलना

हदीस में है कि हिजरत पिछले सारे गुनाहों से पाक करा देती है। एक आदमी सौ क़त्ल करके तौबा के लिए चला तो अल्लाह ने ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया कि मेरा बंदा इस्लाह के लिए चल रहा है। कि सौ क़त्ल करके इस्लाह के लिए चला तो मौत आ गई। कोई अमल नहीं किया।

न नमाज़ का,
न ज़िक्र का,
न तिलावत का,
न सच्चाई का,
न अमानतदारी का,

कि कोई अमल नहीं किया है, सिर्फ़ इस्लाह के लिए क़दम उठाया है कि बहुत गुनाह कर लिए हैं, अब चलो अल्लाह की तरफ़। कि अल्लाह अपने बंदे की तरफ़ दौड़कर आने का मतलब ही यही है कि अल्लाह ने सौ क़त्ल करने वाले क़ातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया।

जी हां! इस ज़मीन से कहा कि तू फैल जा और इस ज़मीन से कहा कि तू सिकुड़ जा। ज़मीन के फ़रिश्तों ने नपाई कराई वरना इसका सफ़र अभी शुरू ही हुआ था, इसलिए मेरे दोस्तों याद रखो! कि इस रास्ते की नक़ल व हरकत इस्लाम को फैलाएगी और मुसलमान को मुसलमान बाक़ी रखेगी, ग़ैरों के इस्लाम में आमद का और मुसलमान के मुसलमान बाक़ी रखने का यही एक रास्ता है। जब हज़रत उसामा रज़ि० की जमाअत रवाना हुई मदीना मनुव्वरा से तो जहां–जहां से हज़रत उस्मान रज़ि० की जमाअत गुज़री, वहां के इस्लाम से फिरे हुए इस्लाम में दाख़िल हो गए कि अगर मदीने से इस्लाम ख़त्म हो गया हो तो मदीने से मुसलमानों की

इतनी बड़ी जमाअत न आती।

तश्कील

मेरे बुजुर्गो और दोस्तो! अब इसके लिए इरादे फ़रमाओ और नीयतें फ़रमाओ कि इनशाअल्लाह हमें अपनी ज़ात से करना है और सारी उम्मत तक यह मेहनत और ज़िम्मेदारी पहुंचानी है इसके लिए हिम्मत करके चार–चार महीने के लिए खड़े हों, एक–दूसरे को राज़ी भी करो, तैयार भी करो कि यह सारा मज्मा ख़ास है यह जितने पुराने मज्मे के अंदर आए हुए हैं, यह सब यहीं से जमाअतें बना बनाकर कुरबानी के साथ निकल जाएं। असल कुरबानियां मक़सूद है और पुरानों को बुलाया ही इसलिए जाता है कि यह तक़ाज़ों पर कुरबानियां दे डालें। इसके लिए अफ़राद भी लिखाएं और जमाअतें भी लिखाएं, अब खड़े होकर अपने नामों का इज़्हार करो।

(बयान)

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअद साहब

6 दिसम्बर 2009 ई० दिन इतवार सबुह 10 बजे

जगह : ईंट खेड़ा, (भोपाल)

मेरे मुहर्तम दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इस वक़्त की बुनियादी बात है कि उम्मत ईमान और इस्लाम को बग़ैर मेहनत और कोशिश के हासिल करना चाहती है पर दुनिया को मेहनत के बग़ैर हासिल करना अक़्ल के ख़िलाफ़ समझते हैं। हां लोग कहते भी हैं कि दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं होती। तो जब दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकती, तो दीन सिर्फ़ दुआओं और अंदर की तलब से कैसे हासिल हो जाएगा? यह क़ायदा दुनिया का हर शख़्स जानता है, कि दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकती। इसलिए इंसान उसी चीज़ पर मेहनत करता है, जिस चीज़ से उसे अपनी परेशानियों का हल होने का यक़ीन होता है, जिस चीज़ से उसे अपनी परेशानियों का हल होने का यक़ीन नहीं होता, वह उस लाइन की मेहनत ही नहीं करता। मेरे दोस्तो! जिस लाइन की मेहनत की जाती है, उसी लाइन का यक़ीन दिल के अंदर पैदा हो जाता है और जिस लाइन की मेहनत छूट जाती है, तो उस लाइन का यक़ीन भी दिल से निकल जाता है।

मेरे दोस्तो! यह दुनिया, जो अल्लाह की नज़र में–

कमीनी है,
ज़लील है,
ख़त्म होने के लिए है,

जिस पर कोई वायदा नहीं,

जब यह मेहनत के बगैर नहीं हासिल होती, फिर वह दीन, वह तरीक़ा जो अल्लाह को महबूब व मतलूब है और हमेशा के लिए कामयाबी दिलाने वाला है, उसी पर सारे वायदे हैं, तो दीन बगैर मेहनत और बगैर कोशिश के कैसे हासिल हो जाएगा? अल्लाह तआला ने ताकीद दर ताकीद वायदा किया है, कि हम अपने रास्ते में मेहनत करने वालों को हिदायत ज़रूर देंगे, लेकिन जब तक मेहनत मुतय्यन (तैय) नहीं होगी रास्ता नहीं मुतय्यन होगा, उस वक़्त तक हिदायत हासिल नहीं होगी। इसलिए अंबिया अलैहिस्सलाम के ज़रिए सबसे पहले मेहनत का रूख़ क़ायम किया है पहले मेहनत का रूख़ तैय करो, उसके बाद उस मेहनत के नतीजों की मेहनत तो बाद में होगी, पहले मेहनत का रूख़ तैय करो, कि किस लाइन की मेहनत से हिदायत आती है, सलाहियत दुनिया पर लगती हो और हिदायत दीन की हो जाए, ऐसा मुम्किन नहीं है। अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिस्सलाम की मेहनत को क़ियामत तक के लिए हिदायत हासिल होने का रास्ता तैय कर दिया है इसलिए फ़रमाया है कि–

﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ﴾ (يوسف:١٠٨)

"आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा तरीक़ है मैं (लोगों को तौहीद) ख़ुदा की तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूं कि मैं दलील पर क़ायम हूं मैं भी और मेरे साथ वाले भी और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं।"

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत में जो रूकावटें और इंकार और आपको जो तक्लीफ़ें पहुंचाई गई हैं, इसके साथ–साथ अल्लाह की तरफ़ से भी फ़रमाया गया है कि–

﴿فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ﴾ (روم:٦٠)

"सो आप सब्र कीजिए बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है और यह बद यक़ीन लोग आपको बर्दाश्त न कर पाएंगे।"

नबी जी इस रास्ते की रूकावटें और लोगों को आपकी दावत का क़बूल न करना। यह कहीं आपको अपने रास्ते से हटा न दें।

मेरे अज़ीज़ो, दोस्तों और बुज़ुर्गो! हज़रत रह० फ़रमाते थे कि शैतान की सबसे ज़्यादा ताक़त दावत से रोकने पर लगती है। कि अगर उम्मत दावत पर आ गई तो फ़िर उम्मत को निजात से कोई ताक़त नहीं रोक सकती। लिहाज़ा शैतान सबसे ज़्यादा कोशिश दावत से रोकने पर करता है। आपने सुना होगा कि जब आज़ान दी जाती है, तो शैतान पीट फेरकर भागता है। हदीस में है कि भागते हुए उसकी इतनी बुरी हालत होती है, कि डर की वजह से रीहा ख़ारीज करते हुए पूरी ताक़त लगाकर दावत देने वाले से दूर भागता है। पर जैसे ही दावत देने वाला दावत ख़त्म करता है, अज़ान ख़त्म होती है, वैसे ही शैतान वापसी आ जाता है, जब इक़ामत ख़त्म हो जाती है, तो शैतान फिर आ जाता है। फिर इबादत में ख़राबी पैदा करता है, भूली हुई बातें नमाज़ में याद दिलाता है, कि अगर मेरे डालने वाले ख़्याल से उसकी नमाज़ बिगड़ गई, तो उसके सारे दीन को बिगाड़ने के लिए फिर मुझे किसी मेहनत की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसका सारा दीन ख़ुद–ब–ख़ुद बिगड़ेगा। हदीस में आता है, कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा, वह अपने सारे दीन को बिगाड़ लेगा, शैतान इस कोशिश में नहीं रहता कि उनके मामलात, मुआशरत और अख़्लाक़ बिगाड़ो, शैतान की कोशिश यह होती है, कि उसकी नमाज़ बिगाड़ दूं ताकि यह दीन के किसी शोब्हे में हुक्म पर न चल सकें, क्योंकि सही रिवायतों में हैं कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा वह सारे दीन को ढहा लेगा। सारे आमाल सही निकलेंगे अगर नमाज़ सही निकल जाए।

मैं अर्ज़ कर रहा था, मेरे अज़ीज़ों, दोस्तो! कि यहां शैतान की सबसे पहली कोशिश दावत से रोकने पर होती है, कि अगर उम्मत दावत पर जमा हो गई, तो यक़ीन की तब्दीली से उनके आमाल ऐसे क़ायम होंगे, कि फिर यह मेरे फंदे में नहीं फंस सकेंगे। इसलिए मेरे दोस्तो! इस बात को ख़ूब अच्छी तरह जान लो, कि दावत इल्लल्लाह, यह इबादत में कमाल पैदा करने के लिए है और सबसे ज़्यादा शैतान से जो मोर्चाबंदी (हिफ़ाज़त) का अमल है, वह दावत इल्लल्लाह का अमल है। इबादत में ख़लल डालने के लिए शैतान फिर हाज़िर हो जाता है, इसलिए दावत में तसलसुल

(लगातार दावत देना) रखा है. कि दावत और अमल को यानी दावत और इबादत को मुसलसल जमा रखो ताकि तुम शैतान के मकर व फरेब से बहक न जाओ।

मेरे बुजुर्गो, अज़ीज़ो! असल में दावत देने की वजह यह है कि उससे अपने दीन पर इस्तिक़ामत और अपने दीन पर हिदायत अल्लाह की तरफ़ से मिलती है. अल्लाह तआला ने दावत को हिदायत के लिए तैय किया है--

﴿وَإِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ﴾ (زخرف: ۴۳)

"आप सीधे रास्ते पर है."

आप सीधे रास्ते की तरफ़ रहबरी (रास्ता दिखाने वाला) करने वाले हैं।
मेरा रब भी सीधे रास्ते पर है
जो सीधे रास्ते पर चलेगा वह रब तक पहुंच जाएगा।

"إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ"

कि उलमा ने यही तफ्सीर की है कि जो सीधे रास्ते पर चलेगा वह रब को पा लेगा।

इसलिए मुझे शुरू ही में यह अर्ज़ करना पड़ेगा. कि सारा मज्मा और सारी उम्मत, दिल की गहराइयों से यह तैय करे, जो मेहनत नबियों से आते-आते उम्मत तक पहुंची है। यही मेहनत क़ियामत तक उम्मत की हिदायत का ज़रिया है। जितने काम पर बसीरत (गहरी नज़र) होगी, उतनी ही इस्तिक़ामत (पुख़्तगी) होगी।

इसलिए मेरे अज़ीज़ों, दोस्तों और बुजुर्गो! इस मेहनत को पहले अपनी ज़ात से करने के लिए तैय करो। क्योंकि अल्लाह की ज़ात से ताल्लुक़ और उसके दीन का ज़िंदगी में आना इसी मेहनत से होगा। इसलिए ज़िंदगी का मक़सद बनाकर इस मेहनत को अपनी ज़ात से करना तैय करो।

यह पहली शर्त हैं कि अगर इस मेहनत से हमें
अपने तज़कीया (पाकी) का,
अपनी इस्लाह का,

अपनी तर्बीयत का,
अल्लाह की ज़ात के साथ ताल्लुक़ का,
दिल से यक़ीन नहीं है, तो दावत के आमाल को हल्का समझकर छोड़ दिया जाएगा।

हालांकि दावत के आमाल, आमाले नुबूवत है। जो हिदायत के लिए, तर्बीयत के लिए, तज़कीया के लिए, अल्लाह की तरफ़ से दिए गए हैं। इसलिए हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि जिस चीज़ को अपने अंदर पैदा करना चाहते हो, उसको अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़्यादा करो क्योंकि दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है, दावत देने वाले के लिए हर हाल में फ़ायदेमंद हैं। इसलिए याद रखो! कि अल्लाह के अज़ाब से उसकी पकड़ से, डराना और अल्लाह की तरफ़ से सवाब की और उसके इनाम की उम्मीद दिलाना, इन दोनों का फ़ायदा दावत देने वालों को ज़रूर होता है। अल्लाह के अज़ाब से डराना अपने अंदर डर पैदा करने के लिए है, दावत दाई की ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है अगर हमारा इस रास्ते में फिरना दूसरों की इस्लाह के लिए है तो हमें काम छोड़कर बैठना पड़ेगा कि काम छोड़कर बैठने वाले यूं कहेंगे कि हम बात पहुंचा चुके हैं अब ज़रूरत नहीं है। क्योंकि बहुत कोशिश की यह लोग मानते ही नहीं हैं।

"दावत" ख़ुद दावत देने वाले के लिए है

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों, अज़ीज़ो! दावत देना तो ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है। आप देखते होंगे कि जितने ताजिर हैं चाहे फेरी लगाने वाले हों, या दुकान पर बैठने वाले हो, ये सब अपनी चीज़ को सिर्फ़ अपने नफ़े के लिए बेचते हैं। अपनी चीज़ की दावत अपने नफ़े के लिए देते हैं लोग उनकी दावत पर उनकी चीज़ को ख़रीदते हैं, जिससे उनको नफ़ा हासिल होता है। कोई तिजारत करने वाला दूसरों के लिए तिजारत नहीं करता। हर ताजिर अपने नफ़े के लिए तिजारत करता है।

बिल्कुल उसी तरह समझ लो कि यह दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है, अपने अंदर उतारने की ग़रज़ से दूसरों को दावत दो, क्योंकि दावत ख़स्सा उसकी तासीर यक़ीन पैदा करना है।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! सबसे पहले इस मेहनत में कलिमे की दावत है। ऐसी मेहनत इस कलिमे पर करो, कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए।

इसलिए मेरे दोस्तो! अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! सबसे पहले इस मेहनत में कलिमे की दावत है। ऐसी मेहनत इस कलिमे पर करो कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए। इसका इख़्लास यह है कि कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' अपने कहने वालों को हराम से रोक दें। पूछा गया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से, कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि कलिमे का इख़्लास क्या है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि इसका इख़्लास यह है कि यह कलिमा अपने कहने वाले को हराम से रोक दें। इसलिए हमें कलिमे की दावत से कलिमे का इख़्लास हासिल करना है, इसके लिए कलिमे की दावत को एक माहौल बनाना पड़ेगा, वह यह है कि मस्जिद में ईमान के हल्के क़ायम करो। जिसमें ग़ैब के तज़्किरे हों। अल्लाह की कुदरत के तज़्किरे हों और मस्जिद के साथी लोगों से मुलाक़ातें करके नक़द मस्जिद में लेकर आने की मेहनत करो। और उन आने वालों को ईमान के हल्के में बिठाओ, एक–एक के पास जाकर मुलाक़ात करो और उससे कहो, भाई मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम है, आप भी तशरीफ़ ले चलें।

मेरे बुज़ुर्गो, अज़ीज़ों, दोस्तो! असल में ईमान की बातें तब समझ में आती हैं, जब आदमी अस्बाब के कायनात के और अल्लाह के ग़ैर से होने के माहौल से निकलकर बाहर आता है। यह कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' कि इख़्लास के हासिल करने का जो पहला सबब है, वह मैं आपसे अर्ज़ कर रहा हूं। क्योंकि हमारा हदफ़ और हमारा निशाना यह है, कि सारे आलम के सारी मस्जिदों को मस्जिदे नुबूवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूल पर लाना है। क्योंकि मस्जिद नुबूवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में-सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक 24 घंटे ऐसे रूहानी आमाल लगातार चलते रहते थे। कि जिस वक़्त भी कोई मस्जिद में दाख़िल होता, उसको मस्जिद में अंदर कोई न कोई मिल जाता था। सहाबा रज़ि० खुद फ़रमाते हैं, कि मैं इस्लाम क़बूल करने के लिए आया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद सहाबा रज़ि० के दर्मियान बैठे हुए अल्लाह के वायदे सुना रहे थे।

हज़रत वासला बिन अस्क़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मैं हिजरत करके इस्लाम में दाख़िल होने के इरादे से आया तो सीधे आकर नमाज़ ही में शरीक हो गया। मैं आख़िरी सफ़ में था, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम फेरकर हमको देखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद मेरे पास तशरीफ़ ले आए।

देखो मेरी बात को ध्यान से सुनो! असल में हमारा मुज़ाकरा ही पुरानों से है, जो अब तक यह समझ रहे हैं, मस्जिद को ख़ाली छोड़कर बस मुलाक़ातें कर लें और दीन की बातें बाज़ारों में करके अपने कारोबारों में चले जाएं या दीन की बात बाज़ारों में करें और अपने दफ़्तरों को चले जाएं।

मस्जिद की जमाअत को चाहिए कि मस्जिद वाला बनकर मस्जिद से निकले और एक–एक को मस्जिद वाला बनाने की ग़रज़ से मुलाक़ातें करें, ताकि मस्जिद में दावत वाले आमाल ज़िंदा हों और मुलाक़ातों के ज़रिए हर ईमान वालों को मस्जिद में लाया जाए। इससे मुलाक़ातें करके यह कहो कि मस्जिद में ईमान का यक़ीन का हल्क़ा चल रहा है, आप भी तशरीफ़ ले चलें। अगर वह दस मिनट के लिए भी तैयार हो, तो उसे मस्जिद के माहौल में ले आओ, बाज़ार के माहौल से मस्जिद का माहौल लाखों गुनाह बेहतर है क्योंकि चंद क़दम उसका मस्जिद की तरफ़ उठा लेना, यह अल्लाह की तरफ़ क़दम उठाना है उसका अपने माहौल में बैठकर बात सुनना, जहां अस्बाब और ग़फ़लत का माहौल हो, वहां से मस्जिद के माहौल में लाना कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम करने वाला और तालीम का हल्क़ा क़ायम करने वाला हो।

उन हल्क़ों को चलाने वाले साथी तैय करके बाक़ी साथी मुलाक़ातों के ज़रिए सबको मस्जिद में लाएं कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा चल रहा है। और तालीम का हल्क़ा चल रहा है, चाहे 10 मिनट के लिए ही तशरीफ़ ले चलें। यह जो मस्जिद की तरफ़ उसके चंद क़दम उठे तो उन चंद क़दमों के उठाने पर अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें और मग़्फ़िरत उसकी तरफ़ दौड़कर आ रही है।

हदीस में आता है जो मेरी तरफ़ चलकर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूं, अगर हमनें मुलाक़ातों के ज़रिए ईमान वालों को मस्जिद की तरफ़ बुलाया तो समझ लो कि उसके लिए हिदायत का दरवाज़ा खुल गया। अल्लाह तआला जिसकी तरफ़ दौड़कर आ रहे हों अल्लाह तआला उसको हिदायत क्यों नहीं देंगे?!!

ईमान वालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद आबाद करना है

देखो, मैं बहुत ही ज़रूरी बात अर्ज़ कर रहा हूं, कि यह पहले नम्बर का पहला अमल है। वे लोग जो दूसरे सूबों (शहर) से यहा (भोपाल) आए हुए हैं। वे

भी अच्छी तरह समझ लें कि हमारी मुलाक़ातों का मक़सद ईमान वालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद को आबाद करना है क्योंकि यह मस्जिद की आबादी की मेहनत है, अब तो आमतौर से साथियों का यह ज़ेहन होता जा रहा है, कि वह घरों पर मुलाक़ातें करते हैं और पूरी बात घर के माहौल में ही कर लेते हैं। मस्जिद में लाने की दावत और मस्जिद में लाने की कोशिश का जज़्बा उनमें नहीं है। एक घंटा आधा घंटा लोगों को घरों में जमा करके बात करते हैं अब तो लोगों का भी यह ज़ेहन बन चुका है कि हमसे हमारे माहौल में बात कर लो।

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जो अपने माहौल से निकलकर बाहर नहीं आया, वह ईमान के और यक़ीन के माहौल से कैसे असर अंदाज़ हो जाएगा। इसलिए उसको उसके माहौल से बाहर निकालो और हर एक से मुलाक़ात करो। यह नहीं कि तुम मुलाक़ातों में यह देखो! कि हमारे मुहल्ले में जमाअत के साथी कौन कौन हैं, जिनसे मुलाक़ातें करनी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बाइसते (दुनिया में आने का मक़सद) इंसानियत की तरफ़ है अगर यह काम नुबूव्वत का है तो फिर यह काम उम्मत का है, अगर तुमने यह सोचकर मुलाक़ात की कि यह हमारी जमाअत का आदमी है तो उससे फ़िरका बनेगा उम्मत नहीं बनेगी, इसलिए यह बात याद रखो कि यह मस्जिद की आबादी की मेहनत है कि ईमान वालों के ज़रिए मस्जिद को आबाद करो, हर ईमान वाले से मुलाक़ातें करो। क्योंकि मस्जिद को आबाद रखना हर मोमिन का काम है, अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया कि सिर्फ़ तब्लीग़ी जमाअत के लोग मस्जिद को आबाद करेंगे।

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ﴾ (توبہ:١٨)

"हां, अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है, जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएं, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और बजुज़ अल्लाह के किसी से न डरें, सो ऐसे लोगों की निस्बत तौक़ेअ (यानी वायदा) है, कि अपने मक़्सूद तक पहुंच जाएंगे।"

हर वह शख़्स जो अल्लाह पर ईमान रखता है वह मस्जिद को आबाद करने

वाला है कि 100 फ़ीसद ईमान वाले मस्जिद को आबाद करने वाले हैं। कभी यह ख़्याल न रहे कि मस्जिद की जमाअत, तब्लीग़ी जमाअत को कहते हैं नहीं, बल्कि 100 फ़ीसद ईमान वाले मस्जिद को आबाद करने वाले हैं।

इसलिए मेरे मुहतरम दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! हर ईमान वाला हमें मतलूब है कि मुलाक़ातें करके इसको मस्जिद के माहौल में ले आओ क्योंकि मस्जिद का माहौल–

तर्बीयत के लिए,
हिदायत के लिए और,
दिल में बात उतारने के लिए है।

इसलिए हर एक से मुलाक़ातें करो, हर एक को मस्जिद में लाकर दावत दो, मुहल्ले में मुलाक़ातें करो, उनसे यह कहो कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा चल रहा है, आप तशरीफ़ लें चलें। यह पहली सिफ़त कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' कि इसके साथ मस्जिद की आबादी का जो अमल है, वह ईमान का हल्क़ा है और मुलाक़ातें इसलिए हैं ताकि मुलाक़ातों के ज़रिए उनको मस्जिद के माहौल में लाया जाए। अब मस्जिद के माहौल में लाकर दावत दो ज़ेहन बनाओ, मैंने तफ़सील से कल रात अर्ज़ कर दिया था कि हमें ईमान के हल्क़े में ईमान किस तरह सिखलाना है? क्या बातें करनी है? ईमान की अलामातें बतलाई हैं, जिससे उम्मत के अंदर ईमान की कमज़ोरी का एहसास पैदा हो, यह है मस्जिद की आबादी का पहला काम। अल्लाह तआला ने फ़रमाया *'कि मस्जिद के आबाद करने वालों के दिलों से, मैं अपने ग़ैर का ख़ौफ़ निकाल दूंगा'* हदीस में आता है मस्जिद को आबाद करने वालों से अल्लाह का अज़ाब उठा लिया जाता है।

मस्जिद को आबाद करने वालों से पांच वायदे

हदीस में आता है कि मस्जिद के आबाद करने वालों से अल्लाह तआला के पांच वायदे हैं–

(1) इन पर रहमतें नाज़िल करते हैं,
(2) अल्लाह राहत देते हैं,
(3) अल्लाह राज़ी रहते हैं,

(4) इनको पुल–सिरात (एक पुल है जो जहन्नम पर बना हुआ है उस पर से हर फ़र्द को गुज़रना होगा यह पुल बाल से बारिक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है) से बिजली की तरह गुज़ार देंगे।

(5) जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे।

ये पांच वायदे अल्लाह तआला ने मस्जिद को आबाद करने वालों के लिए कहे हैं।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इन सारी खैरों को हासिल करने के लिए हममें से हर एक यह तैय करे कि रोज़ाना कम से कम ढाई घंटे तो कोई बात ही नहीं है, वरना चार–चार, छः–छः और आठ घंटे मस्जिद की आबादी के लिए फ़ारिग़ करेंगे। देखो मैं सारे मसाइल का हल आपको बता रहा हूं, कि उम्मत पर आने वाले अज़ाब को टालना चाहते हों, उसका यही रास्ता है, अल्लाह तआला मस्जिद के आबाद करने वालों से अपने आज़ाब को उठा लेतें हैं और अगर यह मस्जिद के आबाद करने वाले अपनी दुन्यावी किसी ज़रूरत को हासिल करने के लिए मस्जिद से बाहर निकलें, तो फ़रिश्ते उनकी दुन्यावी कामों में मदद करते हैं, पर हम तो यह सोचते हैं, कि–

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो हमारी दुकान का क्या होगा?

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो दफ़्तर का क्या होगा?

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो कारखाने का क्या होगा?

और अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि अगर मस्जिद को आबाद करने वाले दुन्यावी किसी काम के लिए मस्जिद से निकलेंगे, तो फ़रिश्ते दुन्यावी कामों में उनकी मदद करेंगे, दुन्यावी कामों में उनका साथ देंगे, कितनी बड़ी मदद होगी कि दुन्यावी काम हों और अल्लाह के फ़रिश्ते हमारे मददगार हों। बस इस तरह हमें मस्जिद के अंदर ईमान का हल्का हमें क़ायम करना है, कि अल्लाह की कुदरत को, ग़ैब के तज़्किरे को ख़ूब करना है ताकि हमारा यक़ीन,

तमाम मुशाहेदात (निगाह) से,

तजुर्बों से,

दुनिया की चीज़ों से,

आमाल की तरफ़ फिरें।

इसलिए मेरे मुहतरम दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह मस्जिद की आबादी का पहला अमल है। जब यह मस्जिद से निकलकर अल्लाह की तरफ़ दावत देंगे, तो ख़ुद दावत देने वाले का यक़ीन भी शक्लों से और चीज़ों से हटकर अल्लाह की तरफ़ आएगा। क्योंकि जब तक हम अस्बाब के मुक़ाबले में नमाज़ को नहीं पेश करेंगे, उस वक़्त तक वह नमाज़ पर नहीं आएगा। इसलिए कि जो धंधा वे लिए बैठे है वह उसके नज़दीक नमाज़ से ज़्यादा यक़ीनी है वह यक़ीनी चीज़ को, बग़ैर यक़ीनी के लिए कैसे छोड़ देगा?

आमाल से काम बनने की दावत

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! हमारा यहां मुतलक़ (पूरे) आमाल की तरफ़ बुलाना नहीं है, बल्कि अमल की तरफ़ बुलाना अस्बाब के मुक़ाबले में अगर वह अमल पर आ गया तो हमें इसके अमल का अज्र मिलेगा और अगर वह अमल पर नहीं आया, तो हमारा अपने अमल पर यक़ीन आ जाएगा। हम आमाल की तरफ़ बुला रहे हैं, अपने अंदर आमाल से कामयाबी का यक़ीन पैदा करने के लिए।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! नमाज़ की तरफ़ बुलाओ तमाम काथनात के मुक़ाबले में नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की रोज़ाना दावत दो। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि दो नमाज़ों के दर्मियान मुलाक़ातों के लिए वक़्त निकालना अगली नमाज़ में कमाल पैदा करने के लिए, कि मेरी नमाज़ में कमाल पैदा हो। इसलिए ख़ूब समझ लो कि हमें मुलाक़ातों में नमाज़ की तरफ़ दावत देनी है और अपनी नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की बुनियाद पर दावत देनी है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! देखो, दावत पर इस्तिक़ामत (जमना) जब होती है, जब अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए, नमाज़ की तरफ़ बुलाया जाएगा, इसमें कोई शक नहीं कि दूसरे बे–नमाज़ी को नमाज़ पर लाना है, लेकिन उस काम पर उस मेहनत पर इस्तिक़ामत जब हो सकती है जब यह नमाज़ की तरफ़ बुला रहा हो, अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए इसलिए इतना ज़रूर करो, कि जब नमाज़ की दावत दो, तो नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की दावत दो। अगर वह नमाज़ पर आ गया, तो हमें उसकी नमाज़ का भी अज्र मिलेगा। अगर वह

नमाज़ पर न आया, तो हम ख़ुद अपनी नमाज़ में तरक़्क़ी करेंगे। यह है नमाज़ की तरफ़ दावत देने का मक़्सद कि नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए नमाज़ की तरफ़ बुलाओ। दूसरा काम यह करो कि अपनी नमाज़ों पर ख़ूब मश्क़ करो। अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि नमाज़ में उजलत (जल्दी) करने का आम मिज़ाज है, कि लोग नमाज़ में जल्दी करते हैं–

रुकूअ में,
सज्दे में,
क़ौमे में,
क़ायदे में,

जल्दी करने का आम रिवाज और आम मिज़ाज है। हमने अच्छे–अच्छे नमाज़ियों को पुराने नमाज़ियों को देखा है, कि जिनमें क़ौमा और जल्सा का एहतिमाम नहीं है। हालांकि सख़्त वईद है कि 'अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं, जो रुकूअ और सज्दे के दर्मियान, यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करें"।

"لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ إِلٰى صَلَاةِ رَجُلٍ لَا يُقِيْمُ صُلْبَهٗ بَيْنَ رُكُوْعِهٖ وَسُجُوْدِهٖ"

'अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं, जो रुकूअ और सज्दे के दर्मियान, यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करें"।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हमें उस पर मश्क़ करनी पड़ेगी।

अगर इसी नमाज़ पर मर गए तो क़ियामत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन पर नहीं उठाए जाओगे

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने दमिश्क़ की जामा मस्जिद में एक आदमी को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, उसकी नमाज़ में जल्दी थी। देखकर फ़रमाया कि नमाज़ कब से पढ़ते हो?

उसने कहा, चालीस साल से नमाज़ पढ़ता हूं।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इसी नमाज़ पर मर गए और तुमने अपनी नमाज़ में इत्मिनान पैदा नहीं किया, तो तुम क़ियामत में

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन पर नहीं उठाए जाओगे, क्योंकि आपका दीन है,

"कि नमाज़ इस तरह पढ़ो, जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो"

यह फ़रमाया हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने. किससे फ़रमाया है उससे जो चालीस साल से नमाज़ पढ़ता था, ज़ाहिर बात है कि जिसकी नमाज़ को एक सहाबी देख रहे हैं। यक़ीनन वह कम से कम ताबेअ (जिसने सहाबा रज़ि० को देखा और उसका ख़ात्मा ईमान की हालत में हुआ) तो होगा। उसको देखकर फ़रमाया, इतनी बात तो यक़ीनी है कि वह ताबेअ होगा उस ज़माने की बात है यह देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इस नमाज़ पर मर गए तो तुम क़ियामत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए दीन पर नहीं उठाए जाओगे।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हदीस में नमाज़ में उजलत (जल्दी) करने और नमाज़ को बिगाड़ने की वईद देखा करो, हमें नहीं अंदाज़ा है, कि हमारे दुनिया में कितनी परेशानियां हैं,

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से बिगड़े हुए हैं।

कितनी बीमारियां हैं

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से पैदा होती हैं।

क्योंकि जो जिस्म इबादत के लिए बना है, अगर उस जिस्म से इबादत को बिगाड़ा जाएगा, तो जिस्म के अंदर बीमारी की लाइन से बिगाड़ पैदा होगा। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि हर जिस्म के हिस्से की बीमारी का पहला सबब इस हिस्से का ग़लत इस्तेमाल है, कि आंख, ज़बान कान, आंख, हाथ, पैर और शर्मगाह वग़ैरह का इस्तेमाल, जब अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होता है तो उन्हें जिस्म के हिस्सों पर बीमारी भेजी जाती हैं।

हां मेरे दोस्तो! बीमारियों का ताल्लुक़ अमल से है, सबब से नहीं। यह जिस्म इबादत के लिए बना है इस जिस्म को इबादत से संवारो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हम अपनी नमाज़ों पर सबसे पहले मश्क़ करें,

लम्बे-लम्बे रुकूअ की,

लम्बे लम्बे सज्दों की,

अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़ूब मौक़ा मिलेगा, क्योंकि अल्लाह के रास्ते में उसका कारोबार, दुकान, बीवी बच्चे, दफ़्तर और कारख़ाना साथ नहीं है हम सारी दुनिया के कामों से निकलकर अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं। इसलिए बेहतरीन मौक़ा है अपनी नमाज़ों पर मश्क़ करने का, जैसी नमाज़ अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मतलूब है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नमाज़ इस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो, बस यह एक ही नमाज़ है।

नमाज़ की तक़्सीम

लोगों ने इस ज़माने में नमाज़ को तक़्सीम कर लिया है।

यह मशाइख़ की नमाज़ है,
यह उलमा का नमाज़ है,
यह आम इंसानों की नमाज़ है,
यह एक ताजिर, दुकानदार की नमाज़ है,

चलो मियां जैसी पढ़ रहा है उसके लिए ठीक है वह शैख़, आलिम, मुहद्दिस, बड़े–बुज़ुर्ग, पीर साहब जैसे पढ़ रहे हैं, उनके एतबार से वह नमाज़ मुनासिब है। नहीं ख़ुदा की क़सम! अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ को तक़्सीम नहीं किया, मैं कैसे नमाज़ को तक़्सीम कर दूं। मैं कैसे अर्ज़ कर दूं............कैसे समझाऊं..............मैंने एक दिन नमाज़ पढ़ाई तो अगले दिन एक साहब कहने लगे कि हमें ज़रा जल्दी है कि इसलिए आज मुत्तक़ियों वाली नमाज़ न पढ़ाइए। मैंने कहा, क्या मैं तुम्हें फ़ाजिरों (गुनाहगारों) वाली नमाज़ पढ़ाऊं !! वह नमाज़ कौन–सी होती है मुझे बता दो। अक्सर पढ़े–लिखे लोग भी बिचारे उसमें मुब्तला है, कि वह नमाज़ में जल्दी करते हैं, सख़्त वईद है कि नमाज़ अल्लाह के यहां बद–दुआ करती हुई जाती है। कि

ऐ अल्लाह! तू इसको इस तरह बर्बाद कर, जिस तरह इसमें मुझे ज़ाया किया है।

नमाज़ी नमाज़ के बाद दुआ करें और नमाज़, नमाज़ी को बद–दुआ, कि नमाज़

की बद-दुआ उसकी दुआओं से पहले मक़बूल हो जाएगी, जब की नमाज़ के बाद की दुआएं मक़बूल होती हैं। क्योंकि नमाज़ मज़लूम हैं और नमाज़ी ज़ालिम, तो मज़लूम की बद-दुआ और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं है। और ज़ालिम के और अल्लाह के दर्मियान दुआओं में रुकावट है, कि दुआ की क़ुबूलियत के लिए सबसे बड़ा ज़ुल्म यह है कि उसने अल्लाह के हक़ को बिगाड़ा है।

दोबारा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज से यह तैय कर लो कि इनशाअल्लाह अपनी नमाज़ों को क़ायम करेंगे, हां, यह नहीं है कि कौन-सी नमाज़ पढ़ेंगे। नमाज़ तो एक ही है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सामने अपनी मस्जिद में जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ने वाले को देखकर बार-बार यह फ़रमा रहे हैं, "दोबारा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी"।

तो मेरे अज़ीज़ो! इस ज़माने में कोई यह कैसे कह सकता है कि हां तुमने नमाज़ ठीक पढ़ ली है, जब तक वह नमाज़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ न हो। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद सहाबी को देख रहे हैं और बार-बार फ़रमा रहे हैं कि 'जा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी' इस हदीस की वजह से हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० और बहुत से सहाबा और बाज़ आलिमों का मज़हब यह है, कि जो नमाज़ जल्दी-जल्दी पढ़ेगा उसकी नमाज़ अदा नहीं होगी। उसको अपनी नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी। बाज़ आलिमों के नज़दीक तो अगर एक दफ़ा जल्से में इस्तिग़फ़ार नहीं किया तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी, नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और उसका कोई एहतिमाम नहीं है, कि दो सज्दों के दर्मियान जल्से में बैठकर इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम हो। रुकूअ से उठने के बाद-

"رَبَّنَالَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ"

इन कलिमात को कहने का लोगों को ख़बर भी नहीं है कि यह क्या कलिमात हैं।

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! सिर्फ़ साल का एक चिल्ला लग जाना, महीने के तीन दिन लग जाना, यह कोई चीज़ नहीं जब तक हम इस मेहनत के

ज़रिए नमाज़ के एक–एक हिस्से पर नमाज़ के एक–एक ज़िक्र पर क़ायम न हों। उस वक़्त तक हमें इस मेहनत से वह चीज़ हासिल नहीं होगी, जो अल्लाह ने उस मेहनत में रखी है, अब तो लोगों की आम आदत है, कि वे उन अज़्कार को अब पढ़ते भी नहीं और दूसरों को पढ़ने के लिए कहते भी नहीं हैं। हालांकि खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन अज़्कार का नमाज़ में पढ़ना साबित है। इन अज़्कार के एहतिमाम करने की इसलिए ज़रूरत है कि नमाज़ के जिस हिस्से में नमाज़ के जिस अमल में, उस अमल का ज़िक्र नहीं होगा, उस अमल की दुआएं नहीं होगी, तो वह अमल क़ायम नहीं होगा।

जल्सा क़ायम होगा, जल्से के ज़िक्र से,

क़ौमा क़ायम होगा, क़ौमा के ज़िक्र से,

जिस तरह सज्दा, सज्दे के ज़िक्र से हो रहा है, कि कम से कम तीन बार "सुब्हान रब्बीयल आला" की कम से कम तीन अल्लाह तआला की पाकी को बयान करते हुए।

उसको रब यक़ीन करते हुए,

उसको बाला व बरतर और आला यक़ीन करते हुए,

कम से कम तीन मर्तबा "सुब्हान रब्बीयल आला" कहे इस तरह सज्दे का अमल हो। मुझे यह अर्ज़ करना है, कि नमाज़ के जिस हैयत (शक्ल) का भी ज़िक्र छोड़ दिया जाएगा, नमाज़ का वह रुक्न खत्म हो जाएगा। इसलिए याद रखो! कि इन अज़्कार का एहतिमाम करना नमाज़ के क़ायम होने के लिए ज़रूरी है। लोग कहते हैं, यह अज़्कार ज़रूरी नहीं है। देखो! नमाज़ का क़ायम करना ज़रूरी है, नमाज़ क़ायम नहीं होगी जब तक अरकान के अंदर इन अज़्कार का एहतिमाम नहीं किया जाएगा। इसलिए जब सहाबी ने पीछे से यह कलिमात कहे।

"رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ"

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से सलाम फेरकर पूछा कि यह कलिमात किसने कहे थे? एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने कहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारे इन कलिमात के अज्र को लिखने के लिए 30 फ़रिश्ते दौड़े और हर फ़रिश्ता यह

चाहता था कि उन कलिमात के अज्र को मैं ही लिखूं, इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो अज़्कार नमाज़ में बतलाए हैं, नमाज़ को क़ायम करने के लिए वह अज़्कार ज़रूरी हैं।

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! उन अज़्कार के एहतिमाम से ही नमाज़ क़ायम होगी। पहली नीयत अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें यह करनी है कि नमाज़ क़ायम हो अगर, नमाज़ क़ायम होगी तो सारा दीन नमाज़ से क़ायम हो जाएगा इसलिए पहली मश्क़ नमाज़ पर यह करो, दूसरी मश्क़ नमाज़ पर यह करो कि नमाज़ में अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो। कि अल्लाह को देखते हुए सिफ़्ते एहसान पैदा करना मतलूब है कि अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो, इस तरह नमाज़ पढ़ो कि मैं अल्लाह को देख रहा हूं, अगर इतना नहीं होता है, तो इतनी बात तो यक़ीनी है कि अल्लाह मुझे देख रहा है। इससे नीचे कोई दर्जा नहीं है। यह नमाज़ पर दूसरी मश्क़ करनी है।

पहली मश्क़ नमाज़ का ज़ाहिर ठीक हो,
दूसरी मश्क़ नमाज़ में अल्लाह के ध्यान की हो। और
तीसरी मश्क़ यह करो कि नमाज़ से ही परेशानियों को हल कराओ।

गुब्बारे बिके, तो मसाइल (परेशानी) हल

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! दावत की मेहनत का मक़सद ही है कि यक़ीन शक्लों से हुक्म की तरफ़ आए, जब कोई ज़रूरत पेश आए सबसे पहले हमारा ख़्याल नमाज़ की तरफ़ जाए, इस तरह इनशाअल्लाह करोगे। क्यों भाई! देखो एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तिजारत के लिए बहरीन (जगह का नाम) जाना चाहता हूं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो। तिजारत से नहीं रोका, फ़रमाया: पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो, फिर करो तिजारत, लेकिन पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो, जब तक नमाज़ पर जो वायदे हैं, उन वायदों का दिल से यक़ीन नहीं होगा, कि यक़ीन के बग़ैर कोई आमाल क़ायम नहीं होगा। देखों तो सही एक गुब्बारे बेचने वाला भी यह यक़ीन करता है कि अगर मेरे गुब्बारे बिके और बच्चों ने ख़रीदे, तो मेरे मसाइल इससे हल हो जाएंगे, इसलिए अपने गुब्बारों को